

विज्ञान

2/12/2018

वह एक ऐसा ग्रंथ था जिसे पढ़ने से मनुष्य काल का ज्ञाता बन जाता था। ना जाने कितने ही लोग उसे खोजते हुए मृत्युपंथ को लग गये। जो लोग काल का ग्रास बन गये उन सब मे एक समानता थी की वे उस ग्रंथ का हेतु अथवा उपयोग ही जानते थे। असल मे किसीको भी उस ग्रंथ का ठिकाना मालुम नही था। सभी ने अपने अपने तरीके से उसे खोजने मे अपनी जिंदगी लगा दी थी पर कामयाब एक भी न हुआ था।

काल पर नियंत्रण रखने की चाह उतनी ही पुरानी है जितनी मनुष्य को काल की समझ है। जब मनुष्य ने काल के रहस्य को जान लिया है तब से वह उसपर नियंत्रण रखने की उसके साथ आगे-पीछे सफर करने की ख्वाईश पाले हुए है। वास्तव मे काल जिसको समय कहा जाता है बहुत पेचीदा चीज है। उसके साथ थोडी सी छेडछाड इतिहास बदल देती है। लेकिन यह सच है की अगर आप वह कर पाये तो आप वह कर ही नही पायेंगे क्योंकि आप समय मे पीछे गये और आपने कुछ घटनाये बदल दी तो आगे का पुरा इतिहास बदल जायेगा और इतिहास के साथ आप भी, मतलब आप इतिहास बदलने के लिये गये यह परिस्थिती ही उत्पन्न नही होगी इसका सीधा अर्थ यह है की आपने समय बदला ही नही मतलब इतिहास वैसा का वैसा ही है। इसि जगह उस ग्रंथ का काम शुरू होता है लोग खुद समय बदलने की सोचते है लेकिन यह ग्रंथ पढ़नेवाले को यह ताकत देता है की वह चाहे जिसके माध्यम से समय को

ताकत देता है की वह चाहे जिसके माध्यम से समय को बदलवा सकते है। उसे वह शक्ती प्राप्त होती है जिससे वह दुसरे का इतिहास बदल सके। लेकीन यह सब सुनी सुनाई बाते है आज तक किसीने अपनी आँखो से उस ग्रंथ को नही देखा सिर्फ उसका नाम और उसके कारनामे सुने है। उस ग्रंथ का नाम है "नीळावंती"। महाराष्ट्र के किसी भी गाव मे जाकर आप किसी बुढे को पुछेंगे तो वह अवश्य आपको नीळावंती के बारे मे बतायेगा। और साथ मे यह चेतावनी भी की उसके पढने से पढनेवाले का वंश नष्ट हो जायेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह ग्रंथ पढने से पढने वाले को पशु पक्षियों की भाषा समझने लगती है।

तांत्रिको मे यह हमेशा से माना जाता रहा है की पशु-पक्षियों का समय मनुष्यो के समय से अलग तरह से चलता है। मनुष्यो के लिये जो काल एक दिन का होता है वही चींटीयों के लिये कई सालों का हो सकता है। और दुसरी मान्यता यह है की समय को समय जितना ही सुक्ष्म होकर परिवर्तित किया जा सकता है। यह सब तब की बाते है जब वह ग्रंथ मिल जाये और उसे पढने की कला अवगत हो। क्योकी वह ग्रंथ मिल भी जाये तो वह किसी मानवीय लिपी मे नही है पैशाच लिपी मे लिखा हुआ है। पैशाच लिपि को जानने वाला कोई भी मनुष्य इस सृष्टि मे नही है। कहा ये भी जाता रहा है की हिमालय की गुफा-कंधराओं मे बैठे साधु-मुनियों मे से कईयों को वह रहस्यमयी लिपी आती है लेकीन वह कहाँ है यह भी कोई नही जानता। तो पुरी बात यह है की वह ग्रंथ कैसा

है यह भी कोई नहीं जानता, ना वह कहाँ है यह, ना उसके पढ़ने का तरीका ही। लेकिन उस ग्रंथ से क्या किया जा सकता है यह जानने से ही कोई भी उसे खोजने के लिये प्रवृत्त हो जाता है, कोई भी का मतलब जिसे किसी अलौकिक कार्य में अति रुचि हो।

ग्रंथ को खोजने का पहला चरण यह था की ग्रंथ की खोज कहाँ से शुरू करे। जिन्होंने उस ग्रंथ के बारे में सुना है उन्होंने भी उन से सुना है जिन्होंने उस ग्रंथ के बारे में सिर्फ सुना है देखा नहीं है। और ऐसे ही यह श्रृंखला पता नहीं कहाँ तक जा सकती है।

“नीळावंती” के बारे में और एक बात प्रसिद्ध थी की उसे जाननेवाला एक मनुष्य आज भी जिवित है उसे लोग बाजिंद कहते हैं और वह महाबलेश्वर के जंगलो में रहता है कहते हैं उसकी आयु १००० वर्ष से भी ज्यादा है। अब सबसे आसान तरीका तो यह है की पहले बाजिंद को खोजा जाये जो उसे जाननेवाला है और उसके पास से जो जानकारी मिले उसके आधार पर “नीळावंती” की खोज करे। और एक बात आप को बता दूँ जो लोग “नीळावंती” के पीछे थे वह चाहे जिस भी काल में हुये हो या फिर किसी भी जगह से हो उन में एक और समानता थी वे सभी महाबलेश्वर के जंगलो में जाते देखे गये थे। उनमें से केवल दो लोग ही जाने के बाद फिर से देखे गये थे वह भी मृत अवस्था में। बाकियों का जिनकी संख्या सैकड़ों में हो सकती है क्या हुआ किसी को नहीं पता क्योंकि उनका ना शरिर मिला था ना कोई अवशेष।

अब इतनी जानकारी मिलने के बाद क्या आप अब भी चाहते हैं की आप भी उस ग्रंथ की खोज करने जाये। तो मैं आप को उस आखरी इंसान के बारे में बताता हूँ जो नीळावंती की खोज में गया था। शायद आपको कोई काम की बात मिल जाये जो आपको नीळावंती खोजने में काम आ जाये।

उसका नाम रावसाहेब था। वह रत्नागिरी के पास एक गाव का जमीनदार था। मुँह में चांदी का चम्मच लेकर जन्म हुआ था कमी किसी बात की नहीं थी। मल्ल थे इसलिये बल भी था। धन और बल दोनों से वह अपने सामने हर किसी को झुकाना पसंद करता था। बहुत अमीर होने के बावजूद उसे एक बात की कमी हमेशा खलती थी। एक ऐसी बात जिससे सब सुख होने के बाद भी उसकी कई पुस्तों को अफसोस के साथ जीने के लिये मजबूर किया था। इस बात का पता चलते ही वे एक ही बात सोचने लगते थे की शायद यह किसी तरह से बदला जा सके। वह बात यह थी की उसके खानदान में बहुत पहले किसी ने केवल गलतफहमी के कारण सात कुएँ भरे जाते इतना सोना और हिरें जवाहरात समुद्र में डुबा दिये थे। उन्हें अफसोस इस बात का होता था की काश वह बात बदली जा सकती तो आज दुनिया के सबसे अमीर इंसानों में गिने जाते पर ऐसा तभी हो सकता था जब समय में पीछे जाकर उस गलतफहमी को दूर किया जा सके।

रावसाहेब को पहले यह बात पता नहीं थी की समय में पीछे जाया जा सकता है। क्योंकि बुद्धिमान

मनुष्य इस तरह की बात सोच भी नहीं सकता जो असंभव हो। पर जैसाकी उसके पहले कई पुश्तों ने किया था केवल वह उस धन का पता लगाना चाहता था। उसके लिये उसने भी उन्ही तरीको को अपनाया था जिसे उसके पुश्तों ने अपनाया था। जैसे ज्योतिषियों, तांत्रिको, मांत्रिको के माध्यम से धन का पता लगाना। लेकिन बहुत कुछ कर के भी कुछ हासिल नहीं हो सका था। समय और पैसा दोनो बरबाद हो रहे थे। लेकिन उस अमर्याद धन के आगे इस धन की कोई किमत नहीं हो सकती थी। और ऐसे मे ही एक दिन रत्नागिरी मे एक अद्भुत मांत्रिक आया। लोग कहते थे की उसने पिशाच्च वश किया हुआ है। जो उसका हर एक हुक्म मानता था।

रावसाहेब को उसमे रुचि नहीं होती यह कैसे हो सकता था। रावसाहेब भी रत्नागिरी चला गया और उस मांत्रिक को मिला। पहले ही मुलाकात मे मांत्रिक ने रावसाहेब पर ऐसी छाप छोडी की उसने मांत्रिक को अपने हवेली पर बुलाया। मांत्रिक आने के लिये कबुल हो गया। दो दिन बाद ही मांत्रिक रावसाहेब की हवेली पर था। उसकी अच्छी मेहमाननवाजी की गयी। हर तरह से उसे प्रभावित करने की कोशिश हो रही थी। इसलिये की रावसाहेब ने यह भी सुना था की मांत्रिक के पास अंजन बनाने की विधी है। प्राचीन काल से ही लोगो मे यह बात प्रचलित है की किसी तरह का रसायनिक काजल जिसे अंजन कहते है वह आँखो पर लगाने से जमीन के नीचे दबा हुआ खजाना दिख जाता है। वही पाने के लिये रावसाहेब इतने यत्न कर रहा था।

एक हप्ता निकल गया पर मांत्रिक ने कुछ नहीं कहा वह तो अच्छे भोजन और मुलायम गद्दों का आनंद ले रहा था। रावसाहेब के सब्र का बांध टूटने लगा था लेकिन फिर भी अगर मांत्रिक को बुरा लगा तो कहीं ये मुझे शाप ना दे दे इसलिये उसने चुप बैठना ही ठिक समझा। रावसाहेब का यह धैर्य व्यर्थ नहीं गया। दूसरे दिन मांत्रिक और रावसाहेब एक कमरे में अकेले बैठे थे तब मांत्रिक ने रावसाहेब से पूछा कि उसे उससे क्या चाहिये। तब रावसाहेब ने अपनी इच्छा और उस खानदानी खजाने के बारे में मांत्रिक को बताया।

मांत्रिक की आँखें चमक उठी, उसने जिंदगी में कभी इतने खजाने के बारे में नहीं सुना था। लेकिन उसने अपने चेहरे को निर्विकार रखा उससे जाहिर नहीं होने दिया कि उसे भी खजाने की लालसा है। उसने रावसाहेब को अपना इतिहास बताना शुरू किया कि कैसे वह मांत्रिक बना। उसने जो बताया वह यह था,

"मैं भी पहले एक सीधा साधा किसान था। मेरा नाम बाबु था। मेरी शादी हो चुकी थी लेकिन माँ-बाप में से कोई भी तब जिवित नहीं था। मेरे पास कुछ बीघा जमीन थी उससे ही अपना गुजारा करता था। एक शाम मैं खेत से लौट रहा था तो मुझे अपने दोस्त जो आग जलाकर उसके पास बैठकर गप्पे लडा रहे थे वे दिख गये। उन्होंने भी मुझे देखा और आवाज लगाई कहा कि मैं भी थोड़ी देर उनके साथ बैठू काम तो रोज का लगा ही रहेगा। मुझे भी यह बात ठिक लगी की आदमी को थोड़ा समय खुद के लिये भी निकालना

चाहिये। घर में बीवी राह देख रही होगी यह बात तो मेरे दिमाग में थी लेकिन फिर मैंने सोचा की एकाद दिन थोड़ी देर हो गई तो क्या हो जायेगा कोई बहाना बना लेंगे। गप्पे लडाते लडाते समय का ध्यान ही नहीं रहा बहुत देर हो गई। मैं गाव के बाहर रहता था। मैंने अपने दोस्तों से इजाज़त मांगी और अपने रास्ते लग गया। मुझे खेत जाने के लिये पुरा गाव पार करना पडता क्योंकि मेरे घर और खेत के बीच में गाव था। और एक बात थी मुझे डर बहुत लगता था, और मेरे घर जाने के रस्ते में श्मशानभूमि थी। मैं घर इसिलिये जल्दी जाता था की रात को श्मशान के पास से गुजरना ना पडे लेकिन उसदिन मुझे बहुत देर हो गई थी।

मैंने जैसे तैसे अपने मन को तैयार किया क्योंकि आगे श्मशानभूमि यानी भूतो का इलाका शुरू होने वाला था। मुझे जैसे डरपोक इंसान के लिये यह बात बहुत गंभीर थी। मैं तेजी से अपने कदम बढाने लगा। मुझे बस अपने घर पहुँचना था। अब श्मशान भूमि शुरू हो गई थी। मैं मन में रामनाम जपने लगा। अचानक से अंधेरा बहुत घना हो गया। मेरा डर अब चरमसीमा तक पहुँच गया। मुझे अब इतना ज्यादा डर लग रहा था की अब इसी डर की वजह से मेरी मौत ना हो जाये इस बात की चिंता हो ने लगी थी।

श्मशान के सन्नाटे को उल्लुओं की आवाज भंग कर रही थी। जिससे माहौल और डरावना हो गया। तभी अचानक से किसी के चीखने की आवाज आई। डर की एक तेज लहर मेरे सीने से दौड गई। मैं जगह पर ही खडा

रहा। दूर कहीं कुछ चमक रहा था। लगता था किसी की चिता जल रही थी। अब मेरी हालत इतनी गंभीर हो गई की मेरे सीने में तेज दर्द होने लगा। मेरी सांस तेजी से चलने लगी और धडकने सामान्य से दुगुनी हो गई। मुझे फिर से वैसी ही चीख सुनाई दी कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा लेकिन वह चीख नहीं थी वह तांत्रिक उसे पुकार रहा था। मैं सोच में पड़ गया की क्या करना चाहिये क्या मुझे तांत्रिक के पास जाना चाहिये या अपनी जान बचाकर भागना चाहिये। मैंने निर्णय कर लिया की वह अपनी जान बचायेगा। मैं भागने लगा मुझे जल्दी से अपने घर जाना था जहाँ मैं खुद को महफुस मानता था। थोड़ी ही दूर गया था की वह तांत्रिक मेरे आगे ही प्रकट हो गया। अब तो मुझे लगा की मैं पक्का मर जाऊँगा। लेकिन तांत्रिक ने अपना अंगुठा मेरे माथे पर लगाकर उसे शांत किया। मुझे बहुत आश्चर्य लग रहा था की मेरा डर ना जाने कहाँ गया था।

उस तांत्रिक ने मेरा हाथ पकड़कर उस जलती हुई चिता के पास लेकर गया। मैंने देखा वह चिता कम और हवनकुंड ज्यादा लग रहा था। उसके आस-पास बहुत सी अजीबोगरीब चीजे रखी हुई थी। उसमें से कुछ तो भयानक भी थी जैसे की इंसान की खोपड़ी, खून से भरे प्याले, अलग अलग मिट्टी के बर्तनों में कई पशुओं के अंग भर कर रखे हुए थे। मुझे समझ नहीं आ रहा था की ये सब चल क्या रहा है। मैंने तांत्रिक को पुछने का सोचा लेकिन तांत्रिक ने जैसे मेरी इच्छा भाँप ली। उसने उँगली मुँह पर रखते हुए इशारे से चुप रहने के लिये कहा। मैं

बहुत देर तक बैठा रहा जब तक की उस तांत्रिक ने सारी विधीया पुरी नहीं की। अब मध्यरात्री हो रही थी, रात शायद अमावस की रही होगी। तांत्रिक उसकी विधी पुरी होते ही वहाँ से उठा और उसने मुझसे कहा की उसे आगे की विधी करने के लिये किसी स्त्री की बली देनी होगी जिसको अबतक बच्चा ना हुआ हो। मेरा दिल दहल उठा उसको लगा की वह किस मुसीबत मे पड गया है।

मुझे बच्चा नहीं हुआ था और मेरी बीवी घर पर थी। मैं एक साधारण किसान था मेरी और मेरी पत्नी का ना कभी झगडा होता था ना वह मुझे किसी बात के लिये तंग ही करती थी। उस तांत्रिक के पास ना जाने कौनसी ऐसी शक्ती थी की मैंने उसे अपनी बाँझ बीवी के बारे मे बताया। बताते समय भी मुझे लग रहा था की यह ठीक नहीं है मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये लेकिन मेरी जुबान अब मेरे नहीं किसी औरके बस मे थी।

तांत्रिक ने जैसे ही मुझ से मेरी बीवी के बारे मे सुना तो वह खुश हो गया। उसने मेरे हाथ मे एक बहुत बडा छुरा दिया और कहा की अपनी बीवी को यहाँ लेके आओ या फिर उसका सिर काट कर लेके आओ। साथ मे एक इंसान की खोपडी भी दी और कहा की यदि बीवी साथ मे नहीं आती और अगर मैं सिर काटने का फैसला लेता हूँ तो जैसे ही गर्दन पर छुरा लगाऊँ तुरंत इस खोपडी मे खुन जमा करूँ बिना एक भी बुंद जमीन पर गिराये। मैंने छुरा हाथ मे पकड लिया मुझे आश्चर्य हो रहा था की मैंने ऐसा क्यों किया।

मैं घर की तरफ जाने लगा जहाँ मेरी बीवी सोच रही होगी की उसका पती हर रोज दिन ढलने से पहले खेत से लौट आता है लेकिन आज ऐसा क्या हुआ की मध्यरात्री के बाद भी वह नहीं आ पाया। शायद उसने बहुत देर तक मेरी राह देखी थी और वैसे ही दरवाजे के पास सो गई। मेरा घर सुनसान इलाके में नहीं था। मेरे घर के आसपास भी थोड़ी दुरी पर कई घर बनाये हुये थे। लेकिन देहातों मे लोग जल्दी सो जाते है तो दो चार कुत्तो के अलावा कोई दिख नहीं रहा था। हालाकि कुत्ते कोई नया इंसान गुजरने पर भौंकते जरूर थे लेकिन मुझसे उनकी पहचान थी इसलिये वह हिले तक नहीं।

मैं अपने घर की तरफ बडा। दरवाजा अंदर से बंद नहीं किया था। घर मे कुछ था ही नहीं तो चोरो का कैसा डर। सिर्फ आगे धकेला हुआ था। मैंने सोचा यह अच्छा हुआ। अगर दरवाजा बंद होता तो बीवी जाग जाती जिससे सारा पासा पलट सकता था। बीच बीच मे मुझे हैरानी भी हो रही थी की मैं इतना निर्दयी कैसे हो सकता हूँ जो किसी तांत्रिक के कहने पर अपनी बेगुनाह बीवी को बेवजह मार डाले। लेकिन यह मेरा दिमाग सोच रहा था शरीर की कृती इससे बिलकुल विपरीत। जैसे कोई और मेरे शरीर को चला रहा हो।

मैं दरवाजा धकेल कर अंदर गया तो वही पर मेरी बीवी सोती हुई दिख गई। मेरा दिमाग जोर जोर से चिल्लाने को चाहता था। मैं चाहता था की बीवी को चिल्लाकर उठा दूँ और भाग जाने के लिये कहूँ। लेकिन मैं कुछ नहीं कर पाया। मैंने धीरे से छुरा और

खोपडी बगल में रख दी अब मेरे हाथ बहुत सफाई से बीवी का गला घोट रहे थे। मेरी अभागी बीवी को आँखे खोलने तक का मौका नहीं मिला। वह छुटने के लिये बहुत छटपटाई लेकिन सिर्फ कुछ पल के लिये और फिर सबकुछ शांत हो गया। बाबु का मन बहुत व्याकुल हो गया लेकिन शरीर से वह वैसा ही निर्विकार था।

मैं अपने घर में थैला ढुँढने लगा जिसमें छुरा और खोपडी रख सकूँ। मुझे थैला मिल गया मैंने थैले में छुरा और खोपडी रखी। थैला कंधे पर लटका दिया। फिर धीरे से अपनी बीवी का शव उठाकर कंधे पर लिया और घर से बाहर आया। बाहर से कुंडी लगाकर घर बंद किया और श्मशान की ओर बढ़ा जहाँ वह तांत्रिक मेरी राह देख रहा था। श्मशान में पहुँचने के बाद मैंने अपनी बीवी का शव उस हवनकुंड के पास लिटा दिया और तांत्रिक को कहा की मैं उसकी गर्दन काटने का धैर्य नहीं कर पाया। तांत्रिक ने कहा की वह यह काम खुद कर लेगा।

तांत्रिक ने मुझे बैठने का इशारा किया और उसने दुसरी विधी प्रारंभ कर दी। उसने मेरी बीवी के शव की मांग भरी। हवनकुंड की अग्नी जब बहुत ज्यादा प्रज्वलित हो गई तो उसने बडी सफाई के साथ मेरी बीवी का सर धड से अलग कर दिया। खून की धारा बहने लगी जो तांत्रिक ने पहले से ही नीचे पकड़े इंसानी खोपडी में गिर रही थी क्योंकि उसे मरे ज्यादा देर नहीं हुई थी तो खून अभी भी गरम था। जब खोपडी खून से पुरी भर गई तो तांत्रिक ने आधे से ज्यादा खून हवनकुंड

मे डाल दिया। थोडा खुन जो बचा हुआ था वह उसे कुछ मंत्र बोलने के बाद घुँट-घुँट कर पीने लगा।

मैं बिलकुल सुन्न हो गया। ऐसा अघोरी कृत्य मैंने कभी सपने मे भी नहीं देखा था जैसा मेरी नजरो के सामने घट रहा था। तांत्रिक ने खुन पीने के बाद उसी छुरे से मेरी बीवी गले से नाभी तक एक चीरा लगाया और उसमे हाथ डाल कर दिल, आँते, गुर्दा आदि अंग निकाल निकाल कर उस अग्नि मे डाल रहा था साथ ही भयानक आवाज मे मंत्रो के उच्चार भी कर रहा था। यह सब अगले एक घंटे तक चलता रहा जब मेरी बीवी के कपडो के अलावा कुछ नहीं बचा तब यह सब थम गया। अब श्मशान का सन्नाटा महसुस होने लगा था। कभी कभी चट चट आवाजे करती हवनकुंड की लकडीयों की आवाज के अलावा कोई हलचल नहीं हो रही थी। अग्नि पहले से ज्यादा धु धु कर जल रहा था। तभी घना कोहरा छाने लगा लेकीन सिर्फ मेरे और तांत्रिक के आसपास जैसे एक घेरा बन रहा हो। हवनकुंड से एक भयानक पिशाच्च प्रकट हो गया उसने तांत्रिक से कहा की वह उसका कोई भी हुक्म मानेगा और पुछा की अभी उसे क्या करना है। तांत्रिक ने कहा की फिलहाल उसको कुछ नहीं करना है लेकिन जब मैं बुलाऊँ तब उसे आना होगा। पिशाच्च ने ये बात मान ली और वह उसी तरह उस कोहरे मे गायब हो गया जैसे वह आया था।

तांत्रिक ने मुझसे कहा की हमें अब यहा से निकलना होगा क्योंकि थोडी ही देर मे सुरज निकल जायेगा और यदि किसीने हमें यहाँ देख लिया तो बहुत

हंगामा हो जायेगा। तांत्रिक ने सारा सामान समेट लिया और मुझसे भी कहा की वह वहाँ मौजूद हर एक निशानी को मिटा दे जिससे वहाँ घटी घटनाओ के बारे मे पता चल सकता हो। मैंने भी वही किया जो मुझसे कहा गया।

सब हो जाने के बाद तांत्रिक श्मशान के पीछे के रास्ते से निकलने लगा उसने मुझे भी अपने साथ आने के लिये कहा। हवनकुंड और बाकी सब तांत्रिकविधीओ की चीजे हटाने के बाद से ही मैं पहले जैसा बन गया था और डर से कांपने लगा था। मुझे समझ मे आ गया की मेरे हाथ से कितना बडा गुनाह हुआ है। मैं तांत्रिक को पुछने लगा की मेरे साथ उसने क्या किया था लेकिन तांत्रिक ने जवाब दिया की अगर मैं उसके साथ चलू तो मुझे सबकुछ बता दिया जायेगा। वैसे भी अब वहाँ पर रहना मेरे लिये अच्छा नही होता यही सोचकर मैं उसके साथ चल पडा।

लगभग चार दिनतक सफर करने के बाद हम दोनो रात को उस खंडहर में पहुँचे जहाँ वह तांत्रिक रहता था। मैंने वहाँ पर देखा तो वहाँ भी वैसी ही अघोरी चीजें दिखाई दी जैसे श्मशान मे थी। फर्क यह था की तब मैं उन सब का हिस्सा नही था लेकिन अब ना चाहते हुए भी वह मेरी जिंदगी मे दाखिल हो चुकी थी। यह मेरी भविष्य का हिस्सा बनने वाली थी। हम दोनो ही बहुत थक चुके थे हालाकी हमने बीच-बीच मे रूककर थोडा सा आराम किया था लेकिन वह हमारी थकान दुर करने के लिये काफी नही था। इसलिये आते ही तांत्रिक और मैं दोनो सो गये। सुरज माथे पर आया तब जाकर तांत्रिक

की आँखे खुली वह उठा और साथ मे मुझे भी उठाया। हम दोनो नदी पर जाकर स्नान करके आये। हम दोनो को भुख भी बहुत लगी थी क्योंकि चार दिनो से बहुत थोडा अन्न पेट मे गया था। लेकीन वहाँ पर ना चुल्हा था ना भोजन की और कोई व्यवस्था। लगता था की तांत्रिक वहा से कई महीनों के लिये बाहर आया था। तभी तांत्रिक ने जोर से पुकारा "सुलेमान"। चार दिन पहले अमावस की रात को एक स्त्री की बली देकर जिस पिशाच्च को वश किया था वही पिशाच्च आगे आकर खडा हो गया और पुछने लगा की उसके लिये क्या आदेश है।

तांत्रिक ने उसे सबसे अच्छा खाना और पीने के लिये महंगे से महंगे पेय लाने के लिये कहा। पिशाच्च ने सिर्फ चुटकी बजाई और जिन चीजों की माँग की गई थी वह चीजे सामने थी। यह देखकर मेरी आँखे खुली की खुली रह गई। मैं समझ गया की क्यों तांत्रिक ने इसे वश करने के लिये इतनी मुसीबत मोल ली थी। वह कोई भी इच्छा पुर्ण कर सकता था। हम दोनो ने भरपेट खाना खाया और साथ मे शरबत, ठंडाई का भी स्वाद लिया।

मैंने तांत्रिक को याद दिलाया की उसने साथ चलने पर सब कुछ बताने का वादा किया था। तब तांत्रिक ने बताना शुरू किया।

“मेरा जन्म कहा हुआ था यह तो मुझे याद नही है लेकीन मुझे एक अघोरी ने पाला था जिसका नाम चंद्राबाबु था। अघोरी वह तांत्रिक जमात होती है जो नरमांस का भक्षण करते है। क्योंकि मैं अघोरी के साथ

रहता था इसलिये हर कोई मुझसे डरता था। वैसे मेरा कोई नाम नहीं रखा गया था लेकिन चंद्राबाबु मुझको कन्नम कहकर पुकारता था। बचपन से ही नरबली और पशुबली को देखते देखते मेरी जैसे आत्मा मर गई थी। उस अघोरी के साथ रहने से मैं भी अघोरी ही बन गया था। मरने से पहले चंद्राबाबु ने मुझको पिशाच्च वश करने की विधी बताई और कहा की यदि किसी भी तरह से तुम्हारा गुजारा ना चले तभी पिशाच्च वश करने की सोचना तब तक नहीं। क्योंकि पिशाच्च वश करने के लिये तुम्हे वह करना पडेगा जो आज तक तुमने कभी नहीं किया। किसी गाव की श्मशानभुमी मे जाकर पहले बकरे, कुत्ते और मुर्गे की बली चढानी होगी और फिर किसी बाँझ स्त्री की उसी के पती के माध्यम से बली चढानी होगी। यदि तुम इसमे सफल हुए तो पिशाच्च वश हो जायेगा और तुम्हारी हर एक इच्छा पुरी करेगा। उस पिशाच्च को हमेशा के लिये अपने हुक्म मे रखने के लिये हर अमावस को तुम्हे एक बच्चे की बली चढानी होगी। तभी वह तुम्हारा हर एक हुक्म मानेगा नहीं तो तुम्हारी बली लेकर वह फिरसे अदृश्य हो जायेगा। यह कहकर चंद्राबाबु ने घंटेभर बाद आखरी साँस ली।

बीस सालो तक मैं खुद का पेट भरने के लिये भटकता रहा। क्योंकि मैं सिर्फ अघोरी के साथ रहता था लेकिन मुझे सभी तांत्रिक क्रियायें नहीं आती थी तो मेरा गुजारा मुश्किल से ही हो पाता था। तो मैंने अब पिशाच्च वश करने की सोची और सालभर से मैं किसी की तलाश कर रहा था। हर ऐसे गाव मे जाकर जहाँ बाँझ औरते है

मैंने यह विधी पुरी करने का प्रयत्न किया लेकिन सफल नहीं हो सका। फिर मैं तुम्हारे गाव मे आया मैंने एक पुरा सप्ताह तुम पर नजर रखी और फिर यह विधी आयोजित की जिसमे मैं पुरी तरह से कामयाब हो गया।"

"अब मुझे एक सहाय्यक की आवश्यकता है और मेरे लिये यह काम तुम करोगे। मैं तुम्हारी हर एक इच्छा पुरी कर सकता हूँ यह तुम अच्छी तरह से जानते हो। और जब मेरा अंतसमय आ जायेगा तब मैं यह पिशाच्चा तुम्हे ही सौंप दूँगा। इसके बदले तुम्हे सिर्फ इतना करना होगा की हर महीने की अमावस को बली देने के लिये एक बच्चा तुम्हे लाना होगा।" कन्नम ने बात पुरी की।

मैंने उससे पुछा की यह काम वह पिशाच्च से क्यों नहीं करवाता तो उसने कहा की यही एक काम है जो पिशाच्च नहीं कर सकता हमे पिशाच्च के लिये करना पडेगा। मैं मन मे बहुत डर गया था। मैं सोचने लगा की जब मैंने अपनी बीवी का कत्ल किया था तब मैं होश मे नहीं था और मेरा खुद पर काबु भी नहीं था। लेकिन अब मैं पुरे होश मे था और ऐसा घिनौना काम फिरसे नहीं करना चाहता था। तो मैंने सोचा की जैसे तैसे इस तांत्रिक से अपना पिछा छुडा लु फिर देखा जाये की क्या होगा।

अमावस की रात जैसे जैसे करीब आने लगी वैसे वैसे कन्नम मुझे किसी बच्चे को लाने के लिये पीछे पड गया। मैंने भी कह दिया की मैं एक बच्चे को चुन चुका हूँ और बडी आसानी से मैं अमावस को उसे वहा

लाऊंगा वह बली की तयारी की तरफ ध्यान दे। इतना कहने पर भी तांत्रिक निश्चित नहीं हुआ था। क्योंकि यह उसके जिंदगी और मौत का सवाल था। उसने मुझे उसी दिन उस बच्चे को हाजिर करने को कहा। मैंने कहा ठिक है और बाहर निकल पडा दो दिन बाद ही अमावस थी। लेकिन मैं वापिस उस जगह तभी गया जब अमावस हो चुकी थी। मैंने वहाँ जाकर देखा की कन्नम का सिर्फ शरीर पडा है जिसका सर नहीं है तो मैं समझ गया की अमावस को पिशाच्च अपनी बली लेने के लिये आया होगा और ना मिलने पर उसने कन्नम का सर खा लिया।

कन्नम की चाह की वजह से मेरी जिंदगी बरबाद हो चुकी थी। ना मेरा घर बचा ना मेरा परिवार। नाही मैं अब मेरे गाव ही वापिस जा सकता था। मैंने बहुत देर तक कन्नम के शरिर के पास बैठकर सोचा की आगे क्या करूँ लेकिन कुछ सुझ नहीं रहा था। मैंने कन्नम के घर यानी उस खंडहर की तलाशी ली कोई कीमती चीज तो नहीं मिली लेकिन एक मंत्रो की किताब मिल गई। जिसमे बहुत से टोटकों की जानकारी थी। मैंने वह किताब उठाई तो उसी जगह पर मुझे और एक कागज दिखा जिसपर हाथसे कुछ लिखा हुआ था। थोडा सा पढने पर मुझे पता चला की वह अंजन बनाने की और इस्तेमाल करने की विधी है। मैंने वहाँ से एक थैला उठाया उसमे वह किताब और वह कागज डाल दिया और चल पडा अपनी किस्मत की परिक्षा लेने के लिये।

पास ही के पहाड पर मुझे एक गुफा मिल गई जहाँ पर कोई आता जात नहीं था। और कोई जंगली

जानवर भी नहीं थे पास ही झरना बहता था तो पीने के पानी की कोई समस्या नहीं थी। वहाँ से थोड़ी ही दुरपर एक बस्ती थी जहाँ से मैं भिक्षा माँग कर लाता और दिन भर उन टोटको को सिद्ध करने की कोशिश करता। मैंने सबसे आसान लगने वाले टोटके जिसमे कोई बली या किसी की हत्या की जरूरत ना हो चुने और वशीकरण, दुसरों की मन की बात जान लेना, आदि टोटके सिद्ध कर लिये। मैं अब अंजन तैय्यार करने के पीछे लग गया। उसके लिये बहुत सारी चीजो की आवश्यकता थी जिन चीजो का नाम तक मैंने कभी नहीं सुना था। लेकिन मैं कभी कभार बस्ती मे किसी से बात करता था तो वह लोग कई चीजो की जानकारी दे देते थे। और मुझे उसका और एक फायदा यह हुआ की वह लोग मुझे अब मांत्रिक कहने लगे थे। मैं भी कभी किसी का बच्चा बिमार हो जाये या किसी का जानवर, किसी की बेटी को बच्चा नहीं होता हो उसके लिये अपने पास से टोटके कर देता था। उनको जब उसके परिणाम अच्छे मिले तो वह मुझे और भी ज्यादा मान देने लगे। जैसे ही मेरे पास वह सब चीजे जमा हो गयी जिनकी अंजन बनाने के लिये जरूरत थी। मैंने रातदिन एक कर के अंजन बना ही दिया। अंजन बनाने की विधी लिखने वाले ने यह भी चेतावनी लिखी थी की यदी अंजन ठीक से नहीं बना तो वह आँख मे लगाने वाला हमेशा के लिये अंधा बन जायेगा।

मेरा मन दुविधा मे पड गया की मैं क्या करूँ कैसे पता चले की मेरा बनाया हुआ अंजन सही तरह का बना हुआ है। वह तो आँख मे लगाने से ही पता

चल सकता था। मैंने आर या पार का निश्चय कर लिया और भगवान का नाम लेकर वह अंजन अपने आँखों में लगाया। पहले मेरे आँखों में इतना तेज दर्द हुआ की जैसे खौलता हुआ तेल मेरे आँखों में पड गया हो। मुझे लगा की मेरी आँखें चली गईं मैं अंधा बन गया। मैंने जो अंजन बनाया था वह गलत बना था। ऐसे कई विचार मेरे मन में आ रहे थे मैं दर्द से चिल्ला रहा था। गुफा की दिवारों पर अपने सर को पटक रहा था। कुछ देर बाद जब थोड़ा सा दर्द कम हुआ और धुंधला नजर भी आने लगा तो लगा की मैं पुरी तरह से अंधा नहीं हुआ हूँ। लेकिन मेरी आँखों को कुछ भी नहीं हुआ था और अंजन भी सही सही बना था यह मुझे तुरंत पता चला जैसे ही मैंने अपनी आँखों को छुआ वह बिल्कुल बर्फ सी ठंडी महसूस हुई। अब समस्य यह थी की अंजन का प्रथम प्रयोग कहा किया जाये। मैंने दो दिन का समय जाने दिया जब मैं मेरे आँखों की ठंडक का आदि हो गया तो मैं तुरंत उस बस्ती में गया जहाँ भिक्षा के लिये जाता था। दो दिन आँखों के दर्द के कारण ना मैं भिक्षा के लिये गया था ना कुछ खाया था। जोरो से भुख लगी थी। मैं बस्ती में गया तो लोगो ने पुछा की दो दिन क्यों नहीं आये मैंने बताया की मेरी तबीयत ठिक नहीं थी। एक अधेड उम्र के आदमी ने मुझे उसके घर पर भोजन के लिये बुलाया। क्योंकि मुझे बस्ती में बहुत मान था तो मैं मना नहीं कर सका और दुसरा कारण यह भी था की अब मुझमें इतनी ताकत नहीं थी की यहा से भिक्षा लेकर वह गुफा में जाकत खाऊँ।

जब मैं उस आदमी के घर पहुँचा जिसका नाम आत्माराम था। उसकी पत्नी ने भोजन परौसा, मैंने उसे भी अपने साथ बैठने के लिये कहा। हम दोनो ने भोजन किया और भोजन के बाद जब हम गप्पे लडाने के लिये बैठे तो मैंने अभी तक भुख की वजह से ध्यान नहीं दिया था की वह आदमी बहुत गरीब था। घर बहुत साधारण था और सामान तो न के बराबर था। मैंने उसे पुछा की क्या तुम्हारा गुजारा ठिक से नहीं चलता तो उसने बताया की उसे तबसे काम करने के लिये मन नहीं लगता जब से किसी बुजुर्ग ने यह बताया की उसके दादा जी ने बहुत सारा धन एक घडे मे बंद करके खेत मे कही गाड दिया है। तो तब से वह दिन भर खेत का एक एक हिस्सा खोदता रहता है। इसिलिये बाकी चीजो की तरफ ध्यान देने के लिये समय नहीं मिलता। उसकी बीवी ही किसी खेत पर रोजी के लिये जाती थी जिससे जैसे तैसे उनका गुजारा चल जाता था। जैसे ही मैंने खेत मे धन की बात सुनी मुझे अंजन की परिक्षा लेने का मौका दिखा। मैंने उसे कहा की अगर मैं उसे उस धन का सही पता दूँ तो क्या मुझे वह उसमे से आधा धन देगा तो उसने मेरी बात मान ली।

उसी रात मैं उसे लेकर उसके खेत मैं गया। जैसा की मैंने अंजन के उपयोग के बारे मे पढा था उसके लिये हिरन के सिंग चाहिये थे जो मेरे पास पहले से थे। मैं उसमे से खेत को देखने लगा। हिरन का सिंग आँख पर लगाते ही जमीन मानो जैसे काँच की बनी हुई हो ऐसी दिखने लगी। दुर एक आम के वृक्ष के नीचे मुझे

कुछ चमकता दिखाई दिया मैं आत्माराम के साथ उस वृक्ष के पास गया तो मैंने फिर से हिरन का सिंग आँखो पर लगाया और उसके जड की तरफ देखने लगा। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जब मैंने स्पष्टरूप से एक पीतला का घडा उसके अंदर के सोने सहित जमीन के अंदर कम से कम तीन हाथ नीचे देखा। मैंने आत्माराम को वहा खोदने के लिये कहा। क्योंकि वह दस-बारह सालों से सिर्फ खोदने का ही काम कर रहा था तो उसने कुछ ही देर मे तीन हाथ गहरा गड्ढा खोद डाला। और घडा साफ तौर से दिखाई देने लगा। हम दोनो ने मिलकर वह उपर निकाला जो बहुत वजनदार था। उसमे बहुत सारे सोने के सिक्के थे। जैसा की तय हुआ था। उसने इमानदारी से उसमे से आधे सिक्के मुझे दिये मैंने उसे एक कपडे मे बाँधकर अपनी गुफा की ओर चल पडा। और वह अपनी घर की ओर। दुसरे दिन पुरी बस्ती मे यह बात फैल गई। मेरी गुफा के चारो ओर तो मानो मेला लग गया था। उस दिन से मेरी जिंदगी ही बदल गई। खजाना ढुँढनेवाला मांत्रिक इसि नाम से मेरी प्रसिद्धी हो गई। अब मेरे पास ज्यादा तर ऐसे ही लोग आते जिनको अपने खेत या घर से गढा हुआ धन निकालना हो। पर हर जगह धन होता ही था ऐसा नही है। कई जगह सिर्फ अफवाहे होती थी। फिर भी मैंने कई लोगो के घर के खजाने ढुँढने मे मदद की और उसमे से आधा हिस्सा कमाया। लेकिन अब तक की मेरी सबसे ज्यादा कमाई सिर्फ ५०० सिक्को की थी। मैंने जब तुम्हारे मुँह से तुम्हारे खानदानी खजाने के बारे सुना तो मुझे लगा की अगर

यह खजाना ढूँढने में मैं तुम्हारी मदद कर सका तो मुझे जिंदगी भर कोई काम करने की जरूरत नहीं है। मैंने मेरी पुरी कहानी तुम्हें इसलिये बताई की जब मैं तुमसे आधे खजाने की माँग करू तो तुम मुझे लालची ना समझो।" मांत्रिक बाबु ने बोलना खत्म किया।

रावसाहेब ने कहा " यह सब सुनकर मेरा आपके प्रति विश्वास और भी बढ गया है। मैं आपसे वादा करता हूँ की जब खजाना मिलेगा तब उसमें से आधा खजाना मैं आपको दूँगा।"

मांत्रिक बाबु ने फिर रावसाहेब से कहा की हर खजाने की खोज की शुरूवात उसके जगह के पता चलने पर ही होती है। और जैसा की रावसाहेब ने बताया था की उसके पुरखो ने उनका खजाना समुद्र में डुबो दिया है तो बाबु ने उससे पुछा की उसे यह बात कैसे पता चली। रावसाहेब ने एक बही के बारे में बताया जिसमें उसके परदादा ने खजाने के बारे में लिखा था।

बाबु को भी रावसाहेब ने वह बही दिखाई जिसमें लिखा हुआ था,

**‘थे खजाने बहुत दुनिया में लेकिन
यह खजाना खोजना नहीं है मुमकिन
भर जाते कुएँ सात ऐसी वह राशी धन की
देखकर वैभव सारा मिट जाती प्यास मन
की
क्या कारण था पता नहीं जो आया इसकी
राह में**

पुश्ते कितनी चली गई इस धनराशी की चाह
मे

कई वीरो ने प्राण त्यज दिये धनपर्वत के इस
शोध मे

लेकीन डुबा दी गई अनंत धन राशी सागरतीर्थ
की गोद मे'

बाबु ने उस बही मे लिखी यह पंक्तियाँ पढी तो
उसे भी कुछ समझ नही आया। हालाकि रत्नागिरी के
पास समुद्र तो था लेकीन बाबु को यह नही समझ आ
रहा था की बिना किसी के जाने इतना सारा धन समुद्र में
डुबाना मुमकीन नही है। किसी ने तो उसे देखना चाहिये
था। क्योंकि अगर धन को सागर में डुबोने की बात सच
है तो यह एक दिन मे नही हो सकता था अगर इतना
सारा धन था।

बाबु ने भी बहुत सोचा मगर उसको इसका
समाधान नही मिल पाया। उसने वह बही फिर से देखी
तो उसे कई पन्नो पर कुछ उल्टे अक्षर जो आसानी से
नजर भी नही आते और पढे भी नही जाते थे दिखाई
दिये। उसने उस कागज को उठाकर प्रकाश की ओर
पकडा तो कुछ अक्षर नजर आये। उसने वह अक्षर
कागज पर उतार दिये वह उल्टे दिख रहे थे इसलिये
आईने के सामने पकड लिये तो उसे एक नाम नजर
आया "निळावंती"।

मांत्रिक ने जल्दी से रावसाहेब को बुलाया और
उसे उसके बारे मे बताया जो उसे अभी पता चला था।

निळावंती नाम सुनकर रावसाहेब भी चौक गया क्योंकि मांत्रिक बाबु और रावसाहेब भी महाराष्ट्र के बाकी के लोगो की तरह इस प्राचीन लोककथा के बारे मे जानते थे की निळावंती नाम का एक ग्रंथ है जिससे पशुपक्षियों की भाषा समझी जा सकती है। लेकिन इसका संदर्भ इस खजाने से कैसे है यह समझ नहीं आ रहा था। रावसाहेब के हवेली पर एक नौकर काम करता था जिसका नाम था माणिक उसने उन दोनो की बाते सुनी वह भी अच्छी तरह से जानता था की उसका का मालिक वर्षों से खजाने की खोज मे लगा हुआ था। तो शायद उनको अपनी जानकारी से मदद हो जाये यह सोच कर उसने रावसाहेब को कहा की वह निळावंती के बारे मे कुछ जानता है।

रावसाहेब ने बताने को कहा तो उसने बताया की सुना है की निळावंती मे समय मे पीछे जाने का भी ज्ञान लिखा हुआ है शायद आपके पुरखे उसकी मदद से वह खजाना खोजना चाहते हो। रावसाहेब और मांत्रिक बाबु दोनो ही उस बात से सहमत हो गये क्योंकि निळावंती के बारे मे जितनी भी किंवदंतीयाँ प्रचलित थी उसमे से यह भी एक थी।

रावसाहेब ने पुछा" लेकिन माणिक यह तो बताओ यह निळावंती अस्सल मे है भी या नहीं। क्योंकि मैंने आजतक कईयों के मुँह से इसके बारे मे सुना है लेकिन मुझे एक भी इंसान ऐसा नहीं मिला जिसने पढने की बात तो दुर निळावंती देखी भी हो।"

“वह कहा है यह तो मैं नहीं जानता हा लेकिन उसे खोजने के लिये कहा जाना पडेगा यह बता सकता हूँ। क्योंकि मैने जो भी सुना है उसके अनुसार महाबलेश्वर के जंगलो मे बाजिंद रहता है उसे निळावंती के बारे मे जरूर पता होगा क्योंकि वह भी जानवरों की भाषा बोलता है।” माणिक ने बताया।

“ठिक है तो फिर हम खुद ही बाजिंद को ढूँढेंगे और उससे निळावंती के बारे मे पता लागायेंगे। इतने सालो के बाद अब जाकर कोई सुराग मिला है खजाने के बारे मे तो अब इसे ऐसे ही जाने नहीं दे सकते।” मांत्रिक ने भी सहमती दर्शायी।

रावसाहेब और बाबु दोनो ही महाबलेश्वर के जंगल के छोर पर खडे थे। उन्होंने अंदर जाने से पहले किसी को पुछना ठिक समझा क्योंकि किसी जानकारी के बिना वे उस घने जंगल मे महीनों भटके तो भी उनके हाथ कुछ लगने की आशा नहीं थी।

थोडी ही दुर एक गडरिया भेड चराता हुआ दिखा। रावसाहेब और मांत्रिक बाबु दोनो उसके पास गये और उसे बाजिंद के बारे मे पुछने लगे। की अगर उनको बाजिंद को ढूँढना हो तो कहाँ जाना चाहिये। पहले तो गडरिये ने बताने से साफ मना कर दिया और कहा की वे दोनो अगर अपने जान की सलामती चाहते है तो वापिस लौट जायें। वे लोग पहले नहीं है जिन्होने बाजिंद के बारे मे जानने की कोशिश की। कोई आज तक बाजिंद को ढूँढ नहीं पाया था। और उसका साफ मानना था की

बाजिँ बस एक कोरी कल्पना है और कुछ नहीं। लेकिन रावसाहेब और बाबु अपनी जिद्द पर अडे रहे। उन्होने कहा की बाजिंद कोरी कल्पना भी हो तो वह खुद अपने से उसकी जाँच करना चाहेंगे क्योंकि इतनी दुर आकर वह खाली हाथ लौटना नहीं चाहते थे। तो गडरिये ने कहा कि वह उन्हे रस्ता दिखाने के लिये तैय्यार है।

उसने उन दोनो को वेताल की एक मुर्ति के पास लाकर छोडा जिसे बरसो से किसी ने नहीं पुजा था कहा की इसके पीछे से सीधे चलते हुये जाये जब तक ऐसी ही एक मुर्ति ना दिख जाये। और उन्हे छोडकर वह चला गया।

रावसाहेब और बाबु दोनो ही वेताल की मुर्ति के पिछे से चल पडे। जैसे जैसे अंदर जा रहे थे वैसे जंगल और ज्यादा घना हो रहा था। वे इतना अंदर पहुँच गये की दोपहर होने के बावजूद रात जैसा अंधेरा छा रहा था। सीधे चलना जितना कहा गया था उतना आसान नहीं था। क्योंकि रास्ते में पेड पौधे, बडी बडी शिलाये इतनी थी की कई बार रास्ता भटक जाते थे। उन्होने मशाल जलायी जो साथ मे लाई थी। पता नहीं कितनी देर हुई लेकिन ना वेताल की मुर्ति दिखने का नाम ले रही थी, जंगल खत्म होने का। अचानक से उन्हे एक आकृती नजर आयी साफ नहीं दिखी लेकिन पता चल रहा था की वह एक मुर्ति है। दोनो ही मुर्ति के पास पहुँचे और सोचने लगे की अब आगे क्या? तभी मुर्ति जिसकी पीठ इनकी तरफ थी वह अपना सर इनकी तरफ घुमाने लगी। दोनो ही डर से काँपने लगे उन्हे समझ आया की क्यों

बाजिंद की खोज में आया हर इंसान मरा हुआ पाया गया था। वह था डर लेकीन सिर्फ डर नहीं जिस जगह पर वे खड़े थे वहाँ की जगह धीरे धीरे सिकुडने लगी इतनी की लगता था वे दोनों उसमें पीस जायेंगे। चारों ओर से जगह इतनी संकरी हो गई की उन दोनों का दम घुटने लगा तभी उनके पैरों के नीचे एक सुरंग तैय्यार हो गई और वे दोनों उसमें गिर गये। वह सुरंग कहीं निकलने का गुप्त रास्ता था। बाबु और रावसाहेब दोनों ही उसपर से फिसलने लगे। कुछ देर बाद वे कहीं पर गिर गये। जंगल के मुकाबले वहाँ पर बहुत प्रकाश था। उन्होंने देखा वह कोई पुराना किला था। बाकी किलों की तरह यह उँचाई पर नहीं था बल्कि जमीन की सतह के काफी नीचे बना हुआ था। किले की हालत कुछ खास अच्छी नहीं थी। कुछ दिवारें, खंबे बचे हुए थे बाकी सब गिर गया था। गिरते समय बाबु और रावसाहेब का शरीर कई जगह से छिल गया था और कपड़े भी थोड़े से फट गये थे।

उन दोनों को यह पता नहीं चल पा रहा था की वे जंगल के कौनसे हिस्से में हैं। दोनों ही वहाँ से बाहर निकलने का रास्ता खोजने लगे। क्योंकि वे जहाँ से गिरे थे उस सुरंग का छोर दस-बारह हाथ उँचाई पर था। चढ़ाई सीधी थी इसलिये वहाँ पर आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता था। दूसरी बात यह थी की वे उस जगह वापिस जाना भी नहीं चाहते थे। जैसा की किला जमीन की सतह के नीचे उकेरा गया था तब भी बहुत विशाल परिसर में फैला हुआ था। जब इसे बनाया गया था तो मजदूर नीचे आते ही होंगे तो उपर चढ़ने के लिये कोई

ना कोई रास्ता जरूर होना चाहिये था पर बहुत देर तक ढूँढने के बाद भी उपर जाने का जरीया मिल नहीं रहा था। परिसर मे बहुत सी गुफायें भी थी लेकिन वह अंदर कितनी गहरी है इसका अंदाजा नहीं लग रहा था। इनके पास जो मशाल थी वह थोड़ी देर पहले की हडबडी मे कही गिर गई थी। समय निकलता जा रहा था। दिन का कौनसा समय है यह तो पता नहीं चल पा रहा था लेकिन वह कभी ना कभी तो ढलने वाला तो था ही। बाबु का कहना था की ऐसी जगह पर रात के समय रूकना ठिक नहीं होता, कई बार ऐसी जगहे शापित होती है। उसका यह भी कहना था हो ना हो जिन लोगो की जान गई है वे इसी जगह पर मारे गये हो। रावसाहेब को बाबु की बात जँच गई। अब तो उन्हे भी चिंता हो रही थी बात सिर्फ बाहर जाने की नहीं रह गई थी अब जान भी बचानी थी।

वहाँपर २२ गुफाये थी मगर किसी भी गुफा मे प्रकाश नहीं था जिससे अंदर जाकर रास्ते की खोज की जा सके। मांत्रिक को एक चकमक पत्थर दिखाई दिया तो उसने आग जलाकर मशाल बनाने की सोची। बहुत देर कोशिश करने के बाद आखिरकार आग जल गई थी पर दिन ढल चुका था। अंधेरा धीरे धीरे और घना हो रहा था। उनके पास ज्यादा समय नहीं था। पहली गुफा के अंदर मशाल लेकर दोनो दाखिल हो गये। लगता था की गुफा बहुत दुर तक फैली हुई थी क्योंकि मशाल का प्रकाश ज्यादा दुर तक पहुँच नहीं पा रहा था। वह जितना भी आगे जाते उतनी गुफा और दिखाई देने लगती थी।

दिन भर जंगल में चलने के कारण पहले ही दोनों के पैरों ने जवाब दिया था। ऊपर से वह उस सुरंग से भी गिरे थे जिससे भी चोट पहुँची थी। पेट में कौए हल्ला मचा रहे थे। और ऐसे में यदि एक एक गुफा इतनी बड़ी हुई तो क्या कर सकते थे। मशाल आधी खत्म हो गई तभी बाबु ने कहा कि हम और आगे नहीं जा सकते क्योंकि फिर वापिस जाने के लिये प्रकाश नहीं बचेगा। अगर इसी गुफा में फँसे रह गये तो दिन निकलने पर भी प्रकाश नहीं आयेगा और दिशा का पता न चलने के कारण गुफा के अंदर ही फँस जायेंगे। तो रावसाहेब का कहना था कि पता नहीं हमारा यह निर्णय गलत निकल जाये तो, हो सकता है कि बाहर जाने का रास्ता इसी गुफा में से निकले।

समस्या दोनों ओर से थी और वे दोनों ही दुविधा में पड़ गये। दोनों को एक दूसरे के मत सही लग रहे थे। निर्णय लेने के लिये वक्त नहीं था नहीं तो मशाल वही पर बुझ सकती थी। वे गुफा के बहुत अंदर तक आये थे। बाबु ने कहा कि रावसाहेब की बात ठिक है लेकिन हम पहले बाहर जाते हैं और बहुत सारी मशालें बनाते हैं। और दूसरी गुफा से फिर से शुरूवात करेंगे यदि बाकी गुफाओं में रास्ता नहीं मिला तो फिर से पहली गुफा में जायेंगे इससे हमारे बचने के मौके बढ़ जायेंगे। रावसाहेब ने बात मान ली। दोनों गुफा से बाहर आ गये। बाबु की बात बिल्कुल सही थी क्योंकि गुफा के दरवाजे तक पहुँचते ही मशाल बुझ गई थी। रात को क्योंकि तारे नजर आ रहे थे तो बाबु जो रात को खजाने निकालने के लिये

जाते समय तारो से ही समय का अंदाजा लगाया करता था वह समझ गया की आधी रात बीत चुकी है। अब खतरा पहले से ज्यादा बढ़ चुका था। क्योंकि रात का यही वह समय था जिसमें सभी अनहोनी घटनायें हुआ करती हैं। साधनों की कमी की वजह से मशाले बनाने में बहुत समय लग रहा था वैसी परिस्थिति में भी बाबु ने पाँच मशाले बना ली थी। लेकिन उन्हें यकीन नहीं हो रहा था की इतनी मशाले एक गुफा के लिये भी काफी होंगी।

बाबु भी थक गया था उसका मन तो कह रहा था की रास्ता खोजना जरूरी है लेकिन तन साथ नहीं दे रहा था। उसे विश्राम की सख्त जरूरत थी। रावसाहेब की स्थिति भी इससे अलग नहीं थी। दोनों ने सुबह होने का इंतजार करने का फैसला किया और बाहर ठंड लग रही थी इसलिये उस गुफा के अंदर सोने चले गये जिसमें वे पहले जा चुके थे। वे ज्यादा अंदर नहीं गये थे। दोनों लेट गये भुख और थकान के मारे उनका बुरा हाल था। लेटते ही दोनों की आँख लग गई।

तभी रावसाहेब को कहीं से पायल की आवाज सुनाई दी। पहले उसने सोचा की यह उसका वहम होगा कभी कभी थकान की वजह से भी दिमाग भ्रम पैदा करने लग जाता है। फिर से वैसी ही आवाज अब की बार बाबु की भी आँखें खुल गईं और वह उठकर बैठ गया। रावसाहेब को पहले से उठा देखकर बाबु जान गया की उस अकेले को वह आवाज नहीं सुनाई दी। फिर से पायल की आवाज आयी। इस बार ज्यादा तेज। दोनों को डर तो बहुत ज्यादा लग रहा था लेकिन उसका सामना

करने के अलावा उन दोनो के बाद कोई रास्ता भी तो नहीं था। एक दुसरे का हाथ थामे हुए दोनो गुफा से बाहर निकले और देखने लगे की आवाज कहाँ से आ रही है। थोड़ी देर बाद फिर से आवाज आयी वह किसी गुफा से आ रही थी पर कौनसी यह पता नहीं चल रहा था।

बाबु ने मशाल जलायी और वे दोनो हर एक गुफा के मुँह पर जाकर सुनते की आवाज कहाँ से आ रही है। सभी गुफाओं के मुँह एक दुसरे से सटे हुए थे। वे जैसे ही तेरहवी गुफा के पास पहुँचे आवाज ज्यादा ही तेज हो गयी। वे दबे पाँव गुफा के अंदर जाने लगे डर अब हद से ज्यादा बढ़ने लगा था। बाबु का पहले का डरपोक स्वभाव फिर से उभर गया और उसके पाँव थरथर काँपने लगे। वे गुफा के काफी अंदर चले गये थे लेकिन जितना वे आगे जाते थे आवाज उतनी ही अंदर से आती हुयी लगती थी।

तभी बहुत दुर कही एक टिमटिमाती रोशनी दिखी बिलकुल बाबु के हाथ की मशाल जैसी। वे धीरे धीरे उस ओर बढ़ने लगे। वह रोशनी गुफा के अंदर बनी और एक गुफा से आ रही थी। वे उस छोटी गुफा के मुँहाने तक पहुँच गये और जैसे ही अंदर का दृश्य देखा तो दंग रह गये। एक किशोरवयीन लडका जिसके हाथ मे एक लाठी थी जिसमे घुँगरू बाँधे हुये थे। वह अपनी लाठी जमीन पर मार रहा था उससे पायल जैसी आवाज निकल रही थी। उसके आस पास जंगल के हर एक जानवर का एक एक प्रतिनिधी उपस्थित था। जैसे उन सब की सभा हो रही हो और वह लडका उनका नेतृत्व

कर रहा हो। वह लडका प्रत्येक जानवर से बात कर रहा था। बाबु और रावसाहेब समझ गये की यह वही है जिसकी तलाश वे कर रहे थे "बाजिंद"।

गुफा में शेर, भेडिया, लोमड़ी, लकडबग्घा, हिरन, मोर, साप, बिच्छु आदि कई प्रकार के जंगली पशु थे। जंगल में जिनका आपस में बैर होता था वे जानवर भी एक दुसरे के पास बैठे हुये थे। बाबु और रावसाहेब हैरान हो गये। वे सोच रहे थे की अंदर कैसे जाये, कहीं किसी जानवर ने हमला कर दिया तो। वे गुफा के अंदर तो आ गये लेकिन आगे नहीं बढ़े। तभी उस लडके की नजर उन पर पडी। उसने अपना सिर हिलाकर उनको पास आने के लिये कहा। बाबु और रावसाहेब दोनों भी उसके पास चले गये।

उस लडके का चेहरा इतना आकर्षक था की ना बाबु ने नाही रावसाहेब ने इतना खूबसुरत इंसान अपनी पूरी जिंदगी में देखा था। उसने सिर्फ एक धोती पहनी हुई थी। उसका बदन बेहद गठीला था। पुष्ट भुजायें थी लंबे बाल कंधे पर झुल रहे थे और मुसकान के तो क्या कहने। कोई इंसान ही क्या जानवर भी उस मुसकान का कायल हो जाता। उसके चेहरे पर एक अजीब सी शांति थी जो उन्होंने किसी के चेहरे पर नहीं देखी थी। संसार के सभी सुविधाओं से दूर सिर्फ इन जानवरों के बीच रहकर भी वह इतना खुश दिखता था जितना खुश संसार का सबसे अमीर इंसान भी ना हो।

लडके ने उन से पुछा की वे यहाँ कैसे पहुँचे यह उसे मालुम है लेकीन उनके यहाँ आने का हेतु क्या है यह वह जानना चाहता था। उसने कहा की यदि वे निळावंती के बारे मे जानने आये है तो मुश्किल है की वे यहाँ से जिंदा वापिस जाये। उन्हे मारा नही जायेगा लेकीन निळावंती का रहस्य ही यह था की उसे एक बैठक मे सुनना पडता था। लडके का कहना था की वह एक बैठक मे उसे सुना सकता था लेकीन सुननेवाले मे इतनी क्षमता ना होने के कारण वे अपनी जान से हाथ धो देते थे।

तब रावसाहेब ने कहा की उन्हे निळावंती के बारे में सिर्फ इतना जानना है की उनके किसी पुरखे ने लिखी किताब का उससे क्या संबंध है उनकी जानवरो की भाषा समझने मे कोई रूचि नही है। और अपने खानदानी खजाने बाबु से मुलाकात और उस गुफा तक पहुँचने की पुरी कहानी बताई।

तब लडके ने कहा " मेरा कोई नाम नही है। मैने यहाँ आनेवाले लोगो के मुँह से ही सुना है की लोग मुझे बाजिंद के नाम से जानते है। लोग समझते है की मै जानवरो की भाषा जानता हूँ यह निळावंती की वजह से है लेकीन मैने उस ग्रंथ को पढकर जानवरो की भाषा नही सिखी। खुद रुद्रगणिका निळावंती ने मुझे यह भाषा सिखाई है।"

“क्या? निळावंती स्त्री थी। यह हमे नही पता था हमने सिर्फ इतना ही सुना है की निळावंती नाम का एक

ग्रंथ है जिसे पढने से जानवरो की भाषा समझती है।" रावसाहेब ने कहा।

"लेकीन आप निळावंती के बारे में क्यों जानना चाहते है जरा बताईयें।" बाजिंद ने कहा।

रावसाहेब ने अपनी जेब में रखा वह कागज निकाला जिसपर खजाने का उल्लेख किया गया था। और जिसपर निळावंती अक्षर उलटे लिखे गये थे। वह कविता पढते ही बाजिंद मुस्कुराने लगा। बाबु और रावसाहेब दोनो उसके चेहरे की तरफ देखने लगे। बाजिंद ने कहा की इसका उत्तर तो बहुत ही आसान है।

बाजिंद ने कहानी शुरू की

"क्योंकी यह मेरे जन्म के पहले की बात है और मेरी उम्र अभी ११०० साल है तो यह घटना बहुत पुरानी है। आप इसे ध्यान से सुनिये क्योंकि इसि कहानी में आपके खजाने का रहस्य छुपा हुआ है।"

"पहले के लोग बहुत ही अक्लमंद थे। वे जानते थे की मनुष्य प्रकृति के साथ इतना नही एकरूप हो पात जितना पशु, पक्षी, पेड, पौधे होते है। इसिसे वे इस सृष्टी मे अपना वजुद बनाये रखते है। वे प्रकृति के नियमो के बारे मे हमसे बहुत ज्यादा जानते है। सोचिये हजारो पक्षी बिना किसी दिशादर्शक के एक जगह से दुसरी जगह जाते है। प्रत्येक वर्ष कैसे यह वे कर पाते है प्रकृति की अपनी भाषा है, जिससे वह हमसे संवाद करती है। मनुष्यों को भी वह भाषा समझती थी। लेकिन फिर जैसे जैसे मनुष्य यंत्रो का सहाय्य लेने लगा तो उसे प्रकृति के साथ संवाद करने की आवश्यकता कम लगने लगी।

जिन लोगो को अब भी प्रकृति के रहस्य जानने थे उनके लिये उसका एकमात्र जरिया था। जानवर जिनसे बात करके वह उन रहस्यों को उजागर कर सकता था। तो हमेशा से ही वह जानवरो की भाषा सीखने की कोशिश में लगा हुआ था। हालाकि कामयाब कोई विरला ही होता था, वह भी एखाद जानवर की भाषा में। परंतु इतना काफी नहीं था।

फिर किसीने जाना की बच्चे का जन्म हो जाने के बाद यदि उसको पहली बार पिलाया जाने वाला पानी जंगल में रख कर जब सभी पशु, पक्षी, जानवर पी ले तो उसका एक घूँट बच्चे को उन सभी जानवरो की भाषा का ज्ञानी बनायेगा जिन्होंने वह पानी पिया है। जिसने यह बात खोजी थी वह मनुष्य था निळावंती का पिता।

जब निळावंती पैदा हुई थी उसके तीन दिन पहले उसके पिता ने जंगल में एक बर्तन में पानी भरकर रखा था। उन तीन दिनों में जंगल के लगभग सभी जानवरो का मुँह उस पानी को लग गया था। निळावंती पैदा होने के तुरंत बाद उसको वह पानी पिलाया गया। उसका प्रभाव यह हुआ की वह चीडीया, चींटी, कौए, कुत्ते आदि बहुत से जानवरो की भाषा समझने लगी। वह जानवरो की भाषा समझती थी तो उनको उन्हीकी भाषा में उत्तर देती थी। लेकिन जब गाव के लोगो ने यह सुना की छोटी सी लडकी के मुँह से इंसानी भाषा से पहले जानवरो की आवाजे निकल रही है तो उन्होने उसके पिता से कहा की यह लडकी शापित है। इससे गाव पर कोई संकट आ सकता है तुम इसे जिंदा नहीं रख सकते।

निळावंती के पिता ने गाववालो को समझाया की यह सिर्फ उसके किये हुए प्रयोग का नतीजा है पर किसी ने उसकी एक ना सुनी।

पंचायत बिठाई गयी और सभी ने एकमत से निर्णय किया की ऐसी लडकी जो जानवरो की आवाजे निकालती हो उसे जिने का कोई अधिकार नही है। हो सकता है उसके माध्यम से जंगली श्वापद, साँप, बिच्छु गाव मे घुसे और हमारे बच्चो और प्रियजनो को नुकसान पहुँचाये। उससे पहले ही यदि इस लडकी को मार दिया जाये तो उसकी नौबत ही नही आयेगी। निळावंती के पिता ने यह प्रयोग इसलिये किया था की उसे पशुओ की अद्भुत दुनिया को रहस्य समझने थे की कैसे भुकंप, उल्कापात, बाढ, बारिश का प्रमाण और समय इसका पता इन जानवरो को पहले ही चल पाता है। यदि इनसे यह बातें जान ली जाये तो हम भी मनुष्यों की कितने संकटो से रक्षा कर सकते है।

जब पंचायत के निर्णय का पता निळावंती के मातापिता को चला तो उनके पैरो तले जमीन ही खिसक गई। निळावंती की माँ ने कहा की हमे कैसे भी करके इस लडकी को बचाना चाहिये, जिन पशुओ की भाषा जानने की वजह से इसकी जान खतरे मे पड गई है अब वे ही इसकी रक्षा करेंगे। सिर्फ बारह दिन की निळावंती को लेकर उसके माता-पिता जंगल की ओर भागे और उसे लेकर वही रहने लगे। निळावंती को भी जंगल बहुत पसंद आया और जंगल के श्वापदो को भी निळावंती भा गई। सभी जानवर जिनकी निळावंती भाषा बोलती थी

वे निळावंती से बहुत प्यार करते थे। जिनकी भाषा नहीं आती थी उनकी भाषा निळावंती सहवास से सीख गई। दो साल की होने तक तो निळावंती जंगल के किसी भी जीव की भाषा बोल और समझ रही थी। और साथ ही अपने माता-पिता के साथ मनुष्यों की भाषा में भी बोल रही थी। उसके पिता का जो सपना था वह साकार हो चुका था। उन्हें ऐसे ऐसे रहस्य निळावंती के माध्यम से पता चल रहे थे जो कभी कानों से भी नहीं सुने थे।

निळावंती को कई बार जानवर या साँप कहीं दबे हुए खजाने के बारे बता देते थे तो निळावंती के पिता जाकर उस जगह से वह खजाना लाते और उससे कई गरिबों की गुप्त रूप से मदद करते थे। ऐसेही सोलह साल निकल गये। अब निळावंती एक बहुत ही सुंदर किशोरी में बदल गई थी।

एक बार की बात है जब ५-६ लुटेरे कहीं से निळावंती के पिता का पीछा करते हुए उस जंगल में पहुँच गये। निळावंती और उसके परिवार को जीने के लिये जो भी आवश्यक था वह उस जंगल से मिल जाता था। थोड़ा बहुत खर्चा सिर्फ कपड़ों पर ही होता था तो बहुत सा खजाना उसी गुफा में पड़ा हुआ था। लुटेरों ने जब वह देखा तो उनकी आँखें चौंधिया गई। बहुत सारा खजाना बिना किसी मेहनत के मिल गया यह उनके लिये बड़ी खुशी की बात थी। निळावंती के उपस्थित रहते कोई भी उस गुफा की तरफ नहीं आ सकता था क्योंकि जंगल के सभी जानवर उसकी रक्षा करते थे। और उनसे उसे कहीं की भी घटना का पता चल जाता था।

लुटेरों ने खजाना छीनने के लिये निळावंती के माता-पिता को मार डाला। हालाकि यह घटना एक चील के माध्यम से निळावंती को तुरंत पता चल गई मगर उसे आने में थोडी देर हो गई। वह पहुँची तब तक लुटेरें जा चुके थे मगर ज्यादा दुर नहीं जा सके। निळावंती ने जानवरो को संदेश भेजा की कोई भी जिंदा जंगल से बाहर नहीं निकल पाये। लुटेरे जंगल से नहीं निकल पाये रास्ते मे ही हाथीयों के झुंड ने उन्हे कुचल डाला। पर इस घटना ने निळावंती को बहुत आहत किया। उसके हृदय को बडी चोंट पहुँची उसके पिता बहुत ही साधु स्वभाव के इंसान थे उन्होने कभी भी किसी का बुरा नहीं चाहा था।

अबतक तो जंगल के पशु ही निळावंती के सबकुछ थे। उन्ही के लिये जीना और उन्ही के लिये मरना यही निळावंती के जीवन का उद्देश हो गया था। लेकीन उसके माता-पिता की हत्या के साथ उसको एक और उद्देश हो गया समाज के बुरे लोगो का नाश करना। इसके लिये जरूरी था की वह खुद भी मौत से बच सके। उसने जानवरो से पुछकर संजीवनी बुटी का पता लगाया जिसके खाने से मनुष्य मौत को टाल सकता था। जब उसने वह बुटी खाई तो वह भी मृत्यु के भय से रहित हो गयी। उसने अनेक ऐसे लोगो को मौत के घाट उतार दिया जिनसे समाज को खतरा था। और अपने पिता के जैसे बहुत से लोगो की मदद भी की। उसकी अमरता, जानवरों की भाषा समझने की उसकी अद्भुत शक्ती इससे उसकी गणना कुभाण्डो मे होने लगी। कुभाण्ड वह

लोग है जिनमे अद्भुत शक्तियाँ होती है। उन्हें भगवान शिव के गणों मे भी गिना जाता है।

एक दिन की बात है एक तरूण व्यापारी जंगल के रास्ते से कही जा रहा था। वह बैलगाडी मे अपना माल एक गाव से दुसरे गाव जाकर बेचता था। वह पहले कभी भी इस रास्ते से नही गया था इसलिये उसे यह नही पता था की इस जंगल मे किसी अपरिचित का आना प्रतिबंधित है। क्योंकि निळावंती के माता-पिता की हत्या के बाद से जंगल के पशु निळावंती की सुरक्षा की बहुत चिंता करते थे। वे किसी को भी जंगल मे घुसने नही देते थे। मगर वह व्यापारी तो अंदर आ गया था। भेडियों ने उसकी बैलगाडी का पीछा शुरु किया। भेडियो के झुंड को देखकर बैल डर गये और उन्होने जोर से दौडना शुरू किया। बैलगाडी बुरी तरह से खिचने के कारण पत्थरों पर टकरा के टुट गई। व्यापारी निचे गिरकर बेहोश हो गया। बैला जंगल के बाहर भाग गये।

निळावंती को उस व्यापारी के बारे मे पता चला तो वह उसके पास पहुँच गई। उसने देखा की एक खुबसुरत नौजवान बेहोश पडा है। उसके सर पर गहरी चोट आयी है। उसका अगर इलाज नही किया गया तो वह मर जायेगा। वह उसे अपने साथ अपनी गुफा मे लेकर गई। निळावंती को जडीबुटियों का ज्ञान था तो उसने उसका अच्छी तरह से इलाज किया। दो दिन बाद जब उस नौजवान को होश आया तो उसने देखा की एक अतिसुंदर लडकी उसका खयाल रख रही है। उसने निळावंती से बात की और अपना नाम अनिल बताया।

निळावंती ने अनिल से कहा की उसका पुरी तरह से इलाज होने मे कुछ और दिन लग सकते है। उन "कुछ" दिनों मे अनिल को निळावंती से प्यार हो गया। कुछ ही दिनों मे अनिल पुरी तरह से ठिक हो गया। उसने अपने मन की बात निळावंती को बता दी। निळावंती को भी अनिल अच्छा लगा था और वह उसकी इस हालत का खुद को जिम्मेदार मान रही थी। सहानुभुती भी प्यार होने की एक वजह होती है। इसी वजह से निळावंती को भी उससे प्यार हो गया था।

अनिल ने निळावंती से विवाह के लिये पुछा। निळावंती ने कहा की वह उससे विवाह करेगी लेकिन उसकी कुछ शर्तें है। अनिल ने शर्तें पुछी तो निळावंती ने बताया उसकी पहली शर्त यह है की वह रात में कभी भी उसके साथ नहीं सोयेगी। दुसरी शर्त यह है की वह अगर रात को कही जाये तो वह उसे नहीं ढुँढेगा। अनिल ने उसकी दोनों शर्तें मान ली। ५ साल वे बहुत खुशी खुशी साथ रहे।

एक दिन दोपहर को निळावंती और अनिल जंगल में भटक रहे थे तभी एक नेवला और नेवली कही जाते दिख गये। नेवली उदास लग रही थी। निळावंती ने पुछा की वह क्यों दुःखी है। नेवली ने बताया कि उसका पती अंधा है इसलिये वह उसको कभी अकेला नहीं छोड सकती। निळावंती के पास अंजन था। जो निळावंती ने उस नेवले की आँख मे लगाया। तुरंत नेवले को सबकुछ दिखायी देने लगा। नेवली ने निळावंती को दो दिव्य रत्न दिये कहा की यह दो रत्न बहुत शक्तीशाली है। इसमे से

पहला जिसके पास होगा वह किसी के भी मन की बात जान सकता है। और दुसरा पास होने से वह किसी से भी हारेगा नहीं।

निळावंती का पति अनिल दुरसे सब देख रहा था। जब उसने निळावंती से पुछा तो निळावंती ने भोलेपन से बता दिया मगर सिर्फ एक मणी के बारे मे जिससे कभी हार नहीं होती थी। दुसरे मणी के बारे में उसने कुछ नहीं बताया। इसलिये नहीं की उसका अनिल के उपर विश्वास नहीं था बल्कि वह उस मणी की परिक्षा लेना चाहती थी।

अनिल की इच्छा हुई की सदा जीत दिलाने वाली वह मणी उसके पास हो। उसने निळावंती से वह मणी माँग ली निळावंती ने कहा की उसे उनकी क्या जरूरत है तो अनिल ने कुछ नहीं बताया। लेकिन उसने दुसरे मणी के प्रभाव से उसके मन की बात जान ली की अनिल उस जंगल के बाहर जाकर उस राज्य पर विजय प्राप्त करना चाहता था जिसमें वह जंगल था। वह मणी उसके पास होने से यह बहुत आसान हो जाता।

निळावंती को उसके विचार जानकर आश्चर्य हुआ लेकिन उसने अनिल को यह पता नहीं चलने दिया। एक रात जब निळावंती और अनिल जो शर्तों की वजह से अलग अलग सोते थे, सोये हुए थे तब अनिल को दुर से भेडिये के चिल्लाने की आवाज आयी। वह निळावंती को बता रहा था की उसे अब भगवान शिव के गणों मे जाके रहना चाहियें। लेकिन शिवगणों मे स्थान पाने के

लिये जो चीज आवश्यक है वह एक प्रकार का तावीज था। जिसका पता भेडिया उसे बताना चाहता था।

निळावंती ने भेडिये का संदेश सुना तो तुरंत वह नदी की तरफ निकल पडी। निळावंती जाने के थोडी देर बाद अनिल भी उसके पीछे निकल पडा। निळावंती जान गई की अनिल उसका पीछा कर रहा है लेकिन उसने उसे मन नहीं किया।

नदी के किनारे पहुँचने पर भेडिया निळावंती से मिला और उसने बताया की अभी थोडी देर बाद एक प्रेत नदी में बहता हुआ आयेगा उसकी कमर मे वह तावीज बंधा हुआ है जिसकी मदद से वह भगवान शिव के गणों मे शामिल हो सकती थी। निळावंती नदी के किनारे ही उस प्रेत का इंतजार करती हुयी बैठ गयी। आधी रात के समय नदी मे एक प्रेत बहता हुआ आया। निळावंती उस प्रेत के पास गई और उसे खींचकर किनारे पर लेकर आयी।

अनिल पुरी घटना पेड के पीछे छुपकर देख रहा था। निळावंती की पीठ अनिल की तरफ थी तो उसे वह क्या कर रही है यह नहीं दिख रहा था। निळावंती ने प्रेत के कमर मे बंधा तावीज देखा वह बहुत ही विशेष दिख रहा था। और खूद से चमक रहा था। निळावंती तावीज खोलने लगी लेकिन वह इतनी मजबुती से बंधा था की छुटने का नाम नहीं ले रहा था। निळावंती ने आस पास देखा की काटने के लिये कोई चीज मिल जाये लेकिन पत्थर भी नहीं थे सिर्फ रेत ही थी। निळावंती दात से रस्सी काटने के लिये प्रेत के उपर झुक गई। अनिल जो

पीछे से घटना देख रहा था उसे लगा की निळावंती प्रेत खा रही है। वह बहुत डर गया और भाग कर गुफा मे जाकर बैठ गया। जिससे निळावंती को कुछ पता ना चले। अनिल को नही पता था की निळावंती ने उसे उसके पीछे आते हुए देख लिया था।

बडी मुश्किल से वह तावीज निकालने के बाद निळावंती उसे लेकर अपनी गुफा मे आ गई। अनिल वही पर बैठा हुआ था। उसने पुछा की वह कहाँ गई थी। निळावंती ने उसे विवाह के वक्त की शर्त याद दिलायी। लेकीन अनिल ने कहा की वह सब जानता है की वह मुर्दा खाने के लिये गई थी और उसे अब ऐसी औरत से कोई संबंध नही रखना है वह उसे छोडकर जा रहा है। निळावंती ने उसे रोका नही पर समझाने की कोशिश की की वह मुर्दा नही खा रही थी पर अनिल कुछ सुनने की हालत मे नही था। वह तुरंत वहाँ से चला गया।

निळावंती को भगवान शिव के गणो मे शामिल होने के लिये आवश्यक तावीज तो मिल गया था लेकीन उसने सोचा की वह जाने से पहले आज तक उसने जितना ज्ञान इकठ्ठा किया है उसकी विरासत ग्रंथ के रूप मे पीछे छोडना चाहती थी।

उसने शुरूवात से सबकुछ लिखा चींटी की भाषा कैसे समझे, उसके संकेत क्या होते है आदि प्रकार से धीरे धीरे जंगल के सभी जानवरो के बारे मे लिखा। उनकी भाषा लिखी। इसमे बहुत समय निकल गया। वह एक बहुत बडा ग्रंथ बन गया जिसका कोई नाम नही था। ना पढने का कोई क्रम ही था। वह तो बस बहुत सी

जानकारी का संकलन था। उसमे आत्माओं से संपर्क बनाने के तरीके भी लिखे थे।

अब उसे कोई शिष्य चाहिये था जिसे वह इस ग्रंथ को पढने का तरीका और उसके रहस्य को बता सके। लेकिन इतने महत्त्वपूर्ण ज्ञान को वह इतनी आसानी से किसी को भी नहीं सौंप सकती थी।

वह हरदिन इसी तलाश मे होती थी की कोई ऐसा उसे मिल जाये जिसे यह ज्ञान सीखना तो हो लेकिन वह इसका गलत इस्तेमाल ना करें। एक दिन जब वह जंगल मे रोज की तरह घुम रही थी तब उसे मैं मिल गया। मुझे किसी कुँवारी माँ ने लोकलज्जा के डर से जंगल मे छोड दिया था। निळावंती ने मेरी माँ भी पाल नहीं सकती थी इतनी अच्छी तरह से पाला। मैं भी बडे होते होते जानवरों की भाषा और वह सब ज्ञान जो निळावंती ने उस ग्रंथ मे लिखा था सीख गया हालाकि इसके लिये मुझे ग्रंथ पढने की आवश्यकता नहीं पडी।

जब मैं सोलह साल का हो गया जैसा मैं अब हूँ तो निळावंती जिसे मैं माँ कहकर ही पुकारता था मुझे मेरे उससे मिलने की कहानी बताई और कहा की उसे अब उसकी असली जगह पर जाना होगा। उसने मुझे संजीवनी विद्या दे दी जिससे मैं दीर्घजीवी हो गया और मेरी आयु भी थम गई। पीछले हजार सालों से मैं सोलह वर्ष की अवस्था का ही हूँ। संजीवनी विद्या देने के बाद निळावंती ने किसी मंत्र का उच्चारण किया तो उसे लेने के लिये दुसरी शिवगणिकायें आयी। उनके साथ निळावंती हमेशा के लिये शिवगणो के साथ रहने चली

गई। फिर मैं भटकते भटकते इस जंगल में आया और यहीं पर बस गया। तबसे मैं यही रहता हूँ और इस जंगल की रक्षा करता हूँ।" बाजिंद ने कहानी पुरी की।

“लेकीन तुमने हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।” बाबु ने कहा।

“हाँ! मैं बताना तो भुल गया की तुम्हारे किसी पुरखे ने जो कविता लिखी है उसमे जो सागरतीर्थ का नाम है वह समुद्र के लिये नहीं लिखा गया है। असल मे सागरतीर्थ उसि जगह का नाम है जहाँ निळावंती पैदा हुई थी। हजार सालों में उसका नाम जरूर बदला होगा। लेकीन मैं वह जगह जानता हूँ क्योंकि मेरी माँ ने भी मुझे उसि सागरतीर्थ के जंगल मे छोडा था।” बाजिंद ने बताया।

“आज वह जगह किस नाम से जानी जाती है?” रावसाहेब ने पुछा।

“आज वह जगह जानी जाती है रामलिंग के जंगल के नाम से।” बाजिंद ने जवाब दिया।

“मुझे वह जगह पता है। महाराष्ट्र के मराठवाडा प्रांत का बहुत ही प्रसिद्ध तीर्थस्थल है वह।” बाबु ने बताया।

बाजिंद ने फिर दोनो को अपनी आँखे बंद करने को कहा और पलक झपकते ही उसी वेताल की मुर्ती के पास छोड दिया जहाँ से बाबु और रावसाहेब ने जंगल मे प्रवेश किया था।

बाबु और रावसाहेब ने आँखे खोली तो सामने वही वेताल की मुर्ती थी जिससे आगे जंगल मे रास्ता जाता था।

बाबु और रावसाहेब ने आँखे खोली तो सामने वही वेताल की मुर्ती थी जिससे आगे जंगल में रास्ता जाता था। उन्होंने अपने पीछे आवाज सूनी तो वही गडरिया वहाँ पर भेड़ें चरा रहा था और उनसे कह रहा था। मेरी मानो तो यहाँ से वापिस चले जाओ। यहाँ से कोई जिंदा वापिस नहीं आया है।

उनको यकीन नहीं हुआ कि इतना सब घट गया था लेकिन समय अब भी वही का वही था। तो यह सच था, निळावंती से समय पर काबु किया जा सकता है। लेकिन निळावंती कहाँ है यह तो किसी को भी नहीं पता। उसे सिर्फ किस्मत से ढूँढा जा सकता है। निळावंती उसी को मिलता है जो उसका इस्तेमाल नहीं करना चाहता।

अब रावसाहेब और बाबु को रामलिंग जाकर खजाना ढूँढना था। वे रामलिंग पहुँच गये लेकिन वहाँ जाकर उन्हें पता चला कि सालो पहले किसी राजा को यहाँ का खजाना मिल गया उसी पैसो से यहाँ रामलिंग का मंदिर बना हुआ था। अब क्या किया जाये सब खत्म हो गया खजाने की खोज भी और निळावंती की तलाश भी। खजाने का इस्तेमाल हो चुका था। निळावंती भी बाजिंद के पास सुरक्षित थी।

यह थी उस आखरी इंसान की कहानी जिसने निळावंती की खोज की थी। लेकिन निळावंती आज भी रहस्य बनी हुई है। उसकी खोज करनेवाले आज भी उसको ढूँढते रहते हैं।

आपको अगर निळावंती सुननी है तो आप को पता है कि महाबळेश्वर के जंगल में वेताल के मुर्ती के

लोककथाएँ हर संस्कृति का भाग होती हैं।
पर कुछ लोककथाएँ अपने रहस्य की ऐसी
छाप छोड़ जाती हैं की उस कथा की दंतकथा
बन जाती हैं। महाराष्ट्र के जनजीवन में नीलावंती
का कुछ ऐसा ही स्थान है। बचपन से मैं नीलावंती
के बारे में सुन रहा था। उसी नीलावंती की कथा
जरा अलग ढंग से प्रस्तुत की है।

ये एक प्रारूप है निलवन्ती ग्रंथ का पूरी किताब को पढ़ने के लिए आपको Amazon से यह बुक खरीदनी पड़ेगी जिसका सीधा लिंक नीचे दिया गया है

<https://www.amazon.in/nilavanti-granth-original-in-hindi>